!! जय भिक्षु !! !! जय महाश्रमण !!

महापर्व पर्युषण पर्व का सफल आयोजन
खाद्य संयम दिवस
दिनांक 26-8-2011

परस्परोपग्रहो जीवनाम्

!! अर्हम् !!

सुनाम - महातपस्वी, शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी श्री सोहनकुमारी जी छापर के सान्निध्य में महापर्व की अराधना बडे उत्साह और आनन्दमय वातावरण के साथ प्रारंभ हुई।

जैन शासन का महान्पर्व जीवन में ज्योति प्रज्वलित करने का पर्व है। तेरापंथ के चतुर्थ आचार्य श्री मद्जयाचार्य का विराट् व्यकितत्व था। स्वाध्याय, ध्यान, जप, तप के द्वारा जीवन को पवित्र बनाएं। महापर्व पर्युषण हमें अधिक से अधिक संयमित और नियमित बनाना सिखाता है। मैत्री पर्व की महत्ता को पहचानने की कोशिश करें।

पर्युषण पर्व की विशेष प्रेरणा देते हुए साध्वी श्री सोहनकुमारी जी ने कहा-अधिक से अधिक अप्रमत्ता की साधना करें। अपने आपको पहचानने और निरिक्षण करने के लिए इस सूत्र को याद रखें-उट्ठिए णो पमायए। जागृत रहकर समय का सदुपयोग करते हुए सम्यक् साधना अराधना करते हुए सम्यक् दर्शन की ओर अग्रसर बनें। स्वयं की पहचान ही पर्युषण की देन है। मैत्री, समता आदि के द्वारा ही व्यकित में अधिक से अधिक आत्मगुणों को प्रकट कर सकता है। अपने परम लक्षय की ओर अधिक गति करता हुआ आन्तरिक भावों को परिपुष्ट करें, यही इस महान् पर्व का लक्षय है।

साध्वी श्री लज्जावती जी ने इस पर्व की महत्ता को प्रकट करते हुए कहा- कि भारतीय संस्कृति पर्वो कर संस्कृति है। तीन भागों में पर्वो को विभक्त किया जाता है। राष्ट्रीय पर्व, सामाजिक पर्व और आध्यात्मिक पर्व। पर्व की शुध्द्ध अराधना करके अपने आपको पवित्र बनाएं। बाहर से भीतर की तरफ ले जाने के लिए आध्यात्मिक पर्वो की अराधना की जाती है।

इस अवसर पर साध्वी श्री लावण्य श्री जी ने खाद्य संयम दिवस के विषय में, साध्वी श्री सिद्धान्त श्री जी ने तेरापंथ के चतुर्थ आचार्य श्री मद्जयाचार्य के व्यकितत्व एवं कर्तृत्व के बारें में अपने विचार प्रस्तुत किए।

****

स्वाध्याय दिवस

दिनांक 27-8-2011

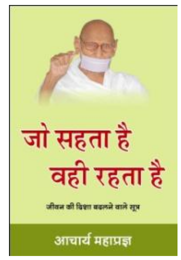

!! अर्हम् !!

सुनाम - **दिनांक** 27-8-2011 **को शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी श्री सोहनकुमारी जी छापर जी के सान्निध्य में स्वाध्याय दिवस का आयोजन किया गया। साध्वी श्री जी ने स्वाध्याय दिवस की महत्ता बताते हुए कहा कि हमारी प्रत्येक क्रिया ज्ञानपूर्वक होनी चाहिए, जिससे कर्म निर्जरा कर अपनी लक्षित मंजिल की ओर आगे बढ सके। उन्होनें कहा कि स्वाध्याय जीवन रूपी उपवन को महकाने का सहज और सरल उपाय है। अत: स्वयं सत्साहित्य का स्वाध्याय करें और दूसरों को भी प्रेरणा दें।**

इस मौके पर साध्वी श्री लज्जावती जी ने स्वाध्याय के बारे में अपने विचार व्यकत करते हुए कहा- कि स्वाध्याय हमारे लिए प्रकाश का काम करता है। उन्होनें कहा कि मन की शुद्धता, वचन की शुद्धि और भावनात्मक शुद्धि स्वाध्याय के माध्यम से ही होती है। उन्होनें कहा कि गीता में जैसे कहा गया है- ज्ञान महायज्ञ है। वैसे ही जैन शासन में स्वाध्याय को महान यज्ञ बताया है, व 12 **प्रकार की तपस्या में स्वाध्याय को आंतरिक तप व महान् निर्जरा का कारण माना है। उन्होनें कहा कि जब से हम जन्म लेते हैं, वहीं से हमारा चैतन्य का संबंध जुड जाता है। उन्होनें बताया कि स्वाध्याय के पांच प्रकार भगवान ने बताएं। वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा। एक व्यकित की जिज्ञासा अनेक व्यकितयों का समाधान बन जाती है।**

****

सामायिक दिवस दिनांक
दिनांक 28-8-2011

!! अर्हम् !!

साध्वी श्री सोहनकुमारी जी छापर जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा-सामायिक का अर्थ है-समता। समता हमारे जीवन का महत्वपूर्ण तत्व है। जिस जीवन में समता नहीं वह विषमता भरे जीवन में जीता है। स्वयं तनाव से भरकर दूसरों को भी अशांत बनना देता है। तीन शब्दों का यह महान् शब्द जीवन को अमृतरस से ओत:प्रोत कर देता है। भगवान महावीर ने स्वयं समतामय जीवन जीया और प्राणीमात्र को यही शिक्षा सूत्र दिया-''समया धम्म मुदाहरे मुणी''। धर्म कहां है! जहां समता, सहिष्णुता है, वहां धर्म है अन्यथा विषमता ही रहेगी। सामायिक तो एक मुहुर्त तक की जाती है, किंतु समता की साधना तो हर पल हर क्षण की जा सकती है। विधिपूर्वक सामायिक का आनन्द निराला होता है। जिस व्यकित के जीवन में समता का अवतरण हो गया है, वास्तव में वह धार्मिक, आध्यात्मिक बन गया।

साध्वी श्री लज्जावती जी ने कहा- कि अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाते हुए कहा-सामायिक में सावद्य योग का त्याग किया जाता है। संसारिक कार्यो से उपरत होकर अधिक से अधिक अपने भीतर जाने का प्रयास करें, जिससे अपनी आत्मा का साक्षात्कार हो सके। गणाधिपति पूज्य गुरूदेव ने श्रावक-समाज पर महान् अनुकम्पा करवा के उपासना का अभिनव उपक्रम दिया। कम से कम एक भी सामायिक करें, किंतु हो विधि के साथ। विधिपूर्वक भाव-क्रिया करने से कर्म निर्जरा बहुत अच्छी होती है। जप योग,ध्यान योग, स्वाध्याय योग, त्रिगुप्ति साधना, इस प्रकार चार भागों में विभक्त कर सामायिक हो तो हमारा मनन आनन्द और उल्लास से भर जाता है।

****

वाणी संयम दिवस
दिनांक 29-8-2011

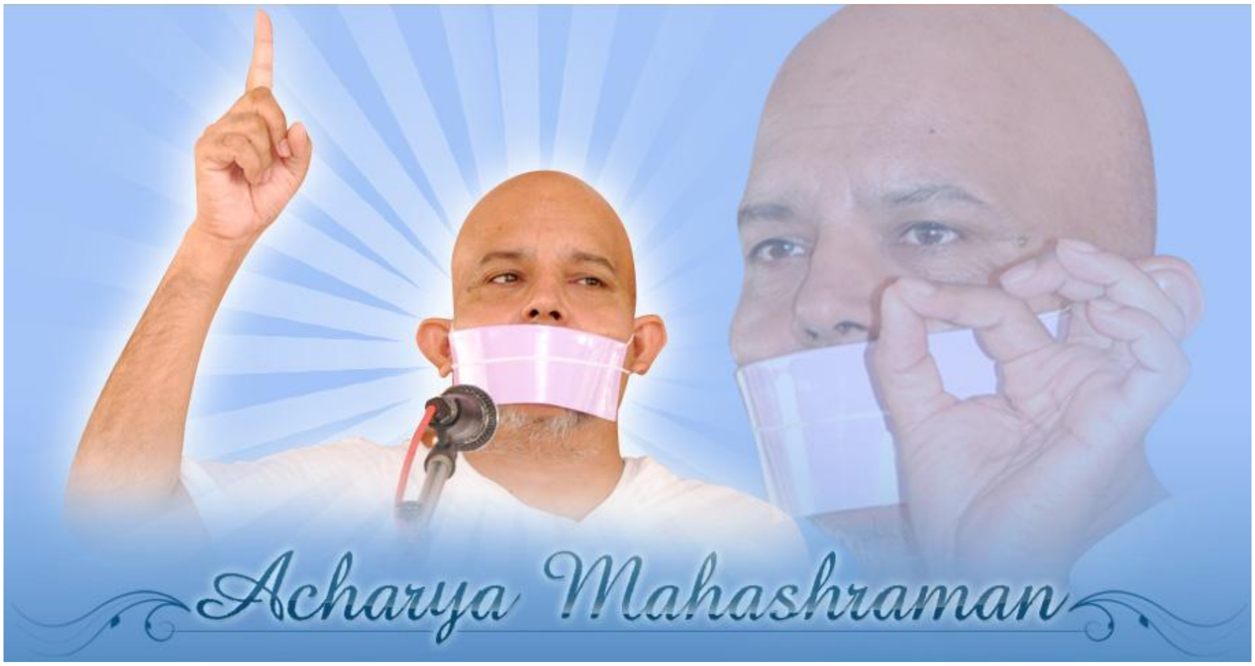

!! अर्हम् !!

सुनाम - दिनांक 29-8-2011 को शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी श्री सोहनकुमारी जी छापर जी के सान्निध्य में वाणी संयम दिवस का आयोजन किया गया।

इस मंगल कार्यक्रम में साध्वी श्री लज्जावती जी ने कहा- कि भाद्रव का महीना आनन्द और उल्लासमय वातावरण निर्मित करता है। प्रकृति भी देखें चारों और हरियाली का साम्राज्य छाया हुआ है। मनुष्य प्रकृति का आनन्द प्राप्त करने के लिए हिल स्टेशनों पर जाता है। हमारे पास तीन शक्तियां प्रकृति से ही प्राप्त है। मन चिंतन तो कर सकता है, लेकिन अभिव्यकित वाणी के द्वारा ही हो सकती है। वाणी में मधुरता और विवके हो तो अपनी और वाणी भाषा दूसरों को आकर्षित कर लेते है। कोयल और कौआ दोनों बोलते है, किंतु एक तो सभी चाहते है और दूसरे को वहां से हटा दिया जाता है। शास्त्रों में कहा गया है- कि बोलो तो विचार पूर्वक बोलो। सत्य भी वैसा न बोलो जो कटु होता है।

मन, वाणी और शरीर ये तीनों योग हमारे जीवन के बहुत मूल्यवान है। मन के द्वारा सम्यक् प्रवृति, वचन की सम्यक् प्रवृति ओर शरीर की सम्यक् प्रवृति ही हमारे जीवन में नया मोड प्रदान करते है। व्यवहार को शुध्द बनाएं रखने के लिए वाणी का संयम होना अति आवश्यक होता है। साध्वी श्री सिद्वान्नत श्री जी ने प्रासंगिक विचारों की प्रस्तुति दी।

****

अणुव्रत दिवस
दिनांक 30-8-2011

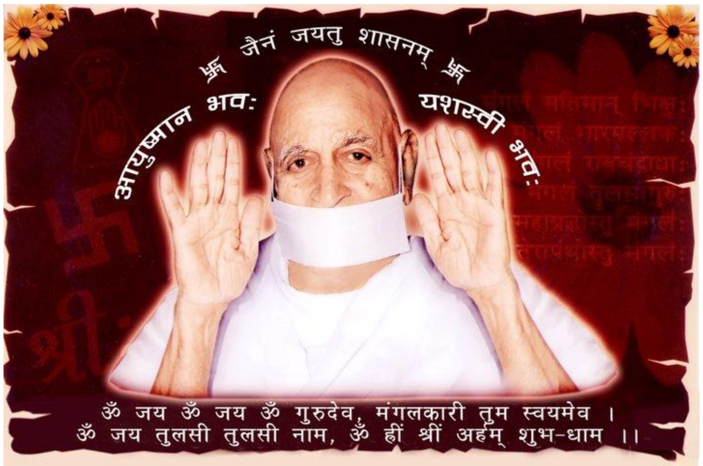

!! अर्हम् !!

सुनाम - दिनांक 30-8-2011 **को शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी श्री सोहनकुमारी जी छापर जी के सान्निध्य में अणुव्रत दिवस का आयोजन किया गया।**

साध्वी श्री लज्जावती जी ने अपने विचार व्यकत करते हुए कहा- कि भारतीय संस्कृति व्रतो की संस्कृति रही है। व्रत जीवन का सुरक्षा कवच है। व्रत यानि त्याग। त्याग जीवन को महान् बनाता है। शिष्य ने गुरू के समक्ष अपनी जिज्ञासा व्यकत करते हुए कहा-भंते! आज के संसार में उपदेष्टा और प्रवचनकार बहुत है, किंतु उसका प्रभाव जीवन में क्यों नही होता है! गुरू ने समाधानन देते हुए कहा-शिष्यों जब तक जीवन में उसका प्रयोग नहीं होगा, आचरण नही होगा, तब तक कोई परिवर्तनन संभव नही। व्रत आखिर में है, क्या! जीवन रूपी बधिया में छेदों को रोकना

आचार्य श्री तुलसी जी ने अणुव्रतों के माध्यम से प्राणी मात्र को जीवन की कला सीखाई। व्रत मानवीय जीवन का आदर्श है। अणुव्रत यही प्रेरणा देता है, आप अपने जीवन को नैतिक व प्रामाणिक बनाएं, यही व्रत का उदेश्य है।

****

जप दिवस
दिनांक 31-8-2011

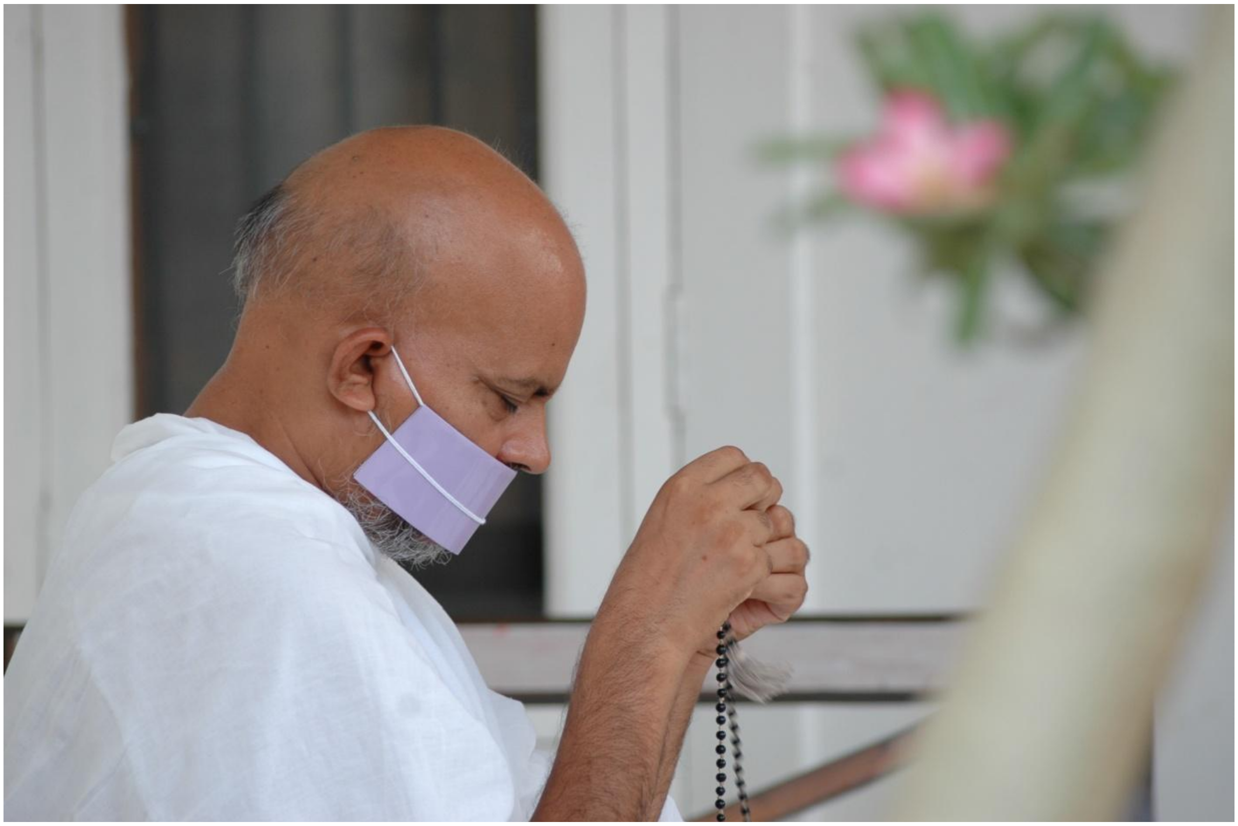

!! अर्हम् !!

सुनाम - दिनांक 31-8-2011 को शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी श्री सोहनकुमारी जी छापर जी के सान्निध्य में जप दिवस का आयोजन किया गया।

साध्वी श्री लज्जावती जी ने इस मंगल कार्यक्रम में कहा- कि प्रत्येक व्यकित अपने जीवन में मंगलमय रहने की कामना करता है, मंगल कैसे होगा। भारत में प्रत्येक धर्म सम्प्रदाय में जप के महत्व को स्वीकार करता है, चाहे किसी रूप में हो। वैसे संनातन धर्म में गायत्री मंत्र का, मुस्लमानों में अल्ला का, बौद्ध में ओम् का और जैन धर्म में नमस्कार महामंत्र का। जप के बारे में साध्वी श्री जी ने बताया कि जप क्या है। स्थूल से सूक्षम की ओर यात्रा करने के लिए जप का अनुष्ठान उपयोगी है। पूरी जागरूकता के साथ करने से स्मृति तेज होती है।

ध्यान दिवस
दिनांक 1-9-2011

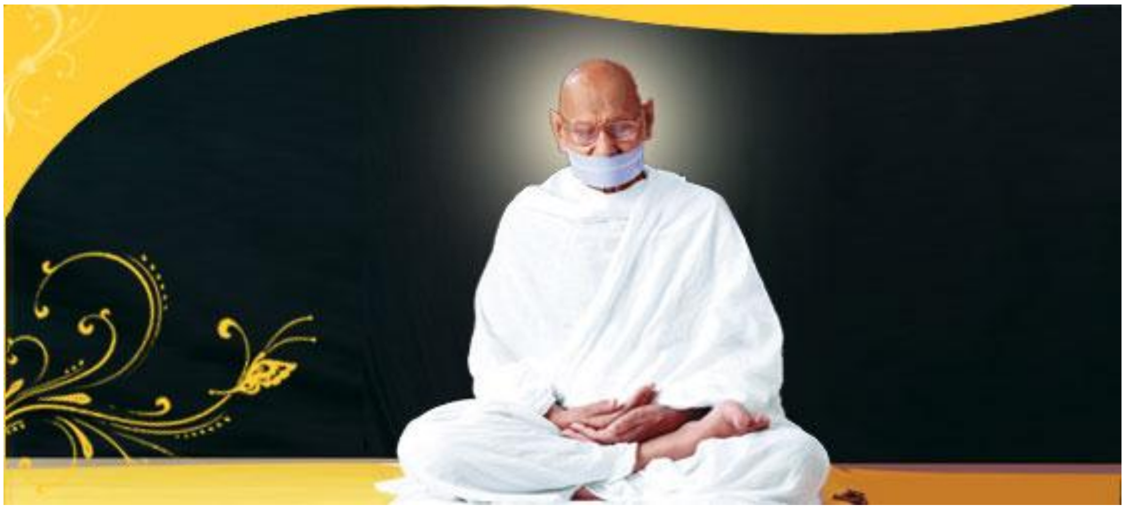

!! अर्हम् !!

सुनाम - दिनांक 1-9-2011 को शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी श्री सोहनकुमारी जी छापर जी के सान्निध्य में ध्यान दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में साध्वी श्री जी ने बताया कि ध्यान क्या है। बाहर से भीतर की ओर जाने का नाम है-ध्यान। चार शब्द बहुत महत्वपूर्ण है- साध्य, साधन, साधना और सिद्धि। जैन दर्शन के अनुसार हमारा साध्य है-वीतरागता। वीतराग की साधना एक दो महीनों में नहीं हो सकती, उसके लिए न मालूम कितने जन्म जन्मांतर करने पडेगे।

****

पर्युषण महापर्व के अन्र्तगत में रोमांचक प्रतियोगिताओ का आयोजन

सुनाम- पर्युषण महापर्व के अन्तर्गत साध्वी श्री सोहनकुमारी जी के सान्निध्य दिनांक 26-8-2011 से लेकर 1-9-2011 तक सांयकालीन विविध अत्यंत रोमांचक व तात्विक प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। जिनमें चार ग्रुप थे। जिनके नाम कुछ इस प्रकार है:- आचार्य श्री भिक्षु ग्रुप, आचार्य श्री तुलसी ग्रुप, आचार्य श्री महाप्रज्ञ ग्रुप, आचार्य श्री महाश्रमण ग्रुप। चारों ग्रुपों में 16 युवक-युवतियों ने अत्यंत प्रसन्नता के साथ भाग लिया। प्रतियोगिताओं का संचालन सुनाम की तेरापंथ युवक परिषद् के सहमंत्री हितेश जैन ने कुशलता के साथ किया। इन रोमांचक प्रतियोगिताओं को देखकर सुनाम के श्रावक समाज में बडी प्रसन्नता रही। प्रतियोगियों के सम्मान समारोह के दिन श्रावक समाज ने और सुनाम तेयुप के अध्यक्ष सुमित जैन ने साध्वी श्री जी से निवेदन किया कि महीने में एक बार इस तरीके की प्रतियोगिताएं करवाने की कृपा कराएं।

आचार्य श्री भिक्षु ग्रुप को सम्मानित करते हुए। आचार्य श्री भिक्षु ग्रुप ने चतुर्थ स्थान प्राप्त किया।

आचार्य श्री तुलसी ग्रुप द्वितीय स्थान प्राप्ति

आचार्य श्री महाप्रज्ञ ग्रुप तृतीय स्थान प्राप्ति

आचार्य श्री महाश्रमण ग्रुप प्रथम स्थान प्राप्ति

संवत्सरी महापर्व

सुनाम - दिनांक 2-9-2011 को शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी श्री सोहनकुमारी जी छापर जी के सान्निध्य में संवत्सरी महापर्व का आयोजन किया गया।

साध्वी श्री जी ने अपने मंगल प्रवचन में कहा- कि पर्युषण पर्व मैत्री का पर्व है। उन्होनें कहा कि अहिंसा और मैत्री के द्वारा हम अपने अंतर्मन की कलुषता को मिटाकर स्वच्छ निर्मल दर्पण की भांति बनकर स्वयं भीतर की ओर मुडकर अपनी भूलों को देखकर अपने आपको पवित्र

साध्वी श्री लज्जावती जी ने कहा- कि आज का दिन हमारे लिए पवित्र और पावन प्रेरणा के साथ आया है। आज का यह मैत्री दिवस प्राणी मात्र के लिए मैत्री का आह्वान करता है। आज के इस मंगल कार्यक्रम में साध्वी श्री लावण्य श्री जी ने भगवान महावीर के पूर्व भवों के साथ उनके साधना काल के परिषदों के बारे में बताया। वहीं साध्वी सिद्धांत श्री जी ने ठाणे सूत्र के आधार पर अपने विचारों की प्रस्तुति दी। अनेक भाई-बहनों ने पौष्ध व उपवास करके अपनी साधना की अराधना की।

****

क्षमायाचना दिवस

क्षमापर्व यानि मैत्री दिवस पर चौरासी लाख जीवायोनि से खमत खामणा करते हुए साध्वी श्री लज्जावती जी ने मैत्री गीत का संगान किया।

हमारी सुनाम की तेरापंथ युवक परिषद् की ओर से हम आप श्री से खमत खामणा करते है। अगर मन, वचन और काया से जाने अनजाने में कभी भी आपका दिल दुखाया हो, तो हम आप श्री से खमत खामणा करते है।

इसी मंगल कामना के साथ ओम् अर्हम्!

Yours Faithfully,
All TYP Members,
President:- Sumit Jain.
Secratery:- Ashish Jain.
Jt.Sec:- Hitesh Jain (90413-99764).

Date Of Sent:- 9-9-2011.

****